

---

# Shri Jagannatha-Prarthana

---

## श्रीजगन्नाथ-प्रार्थना

---

### Document Information



---

Text title : Jagannatha Prarthana

File name : jagannAthaprArthanA.itx

Category : vishhnu, krishna, hkmeher

Location : doc\_vishhnu

Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com

Transliterated by : Harekrishna Meher

Proofread by : Harekrishna Meher

Description/comments : Stavarchana-Stavakam (Sanskrit Stotra-Kavya)

Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher

Latest update : November 11, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 10, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीजगन्नाथ-प्रार्थना



शुभं सुभद्रा-बलभद्र-सङ्गतं  
नमामि नाथं जगतां वरेण्यम् ।  
ओङ्कार-रूपं भुवि दारु-दैवतं  
वेदान्त-वेद्यं महतां शरण्यम् ॥ १ ॥

नतोऽस्मि विष्णुं हृदि राजमानं  
नीलाद्रि-वासं करुणा-निधानम् ।  
वृन्दारकै-र्वन्दित-पाद-पुष्करं  
ब्रह्म-स्वरूपं पुरुषोत्तमं परम् ॥ २ ॥

अपाणि-पादं मनसां प्रसादं  
कृष्णं गुणातीतमजं सुरेशम् ।  
तपोधनैरर्चित-पुण्यपादं  
वन्दे विभुं तं धृत-विश्ववेशम् ॥ ३ ॥

लीला विचित्रा तव मानवायिता  
शारीरिकी भङ्गुरता प्रदर्शिता ।  
वार्त्तास्ति मर्त्ये परिवर्त्तते तनुः  
सत्यं हि मृत्यु-र्नियतं पुनर्जनुः ॥ ४ ॥

पुरातनं दारुमयं कलेवरं  
त्यक्त्वा प्रभो हे ! समये समागते ।  
दधासि देहं नवदारु-सुन्दरं  
सांसारिकी रीतिरियं जगत्पते ! ॥ ५ ॥

लक्ष्मीपतिं शङ्ख-गदाब्ज-चक्रिणं  
श्रीवासुदेवं दुरितापहारिणम् ।  
रथोत्सवे दर्शित-चारु-विग्रहं  
भक्त्या तमीशं शिरसा नमाम्यहम् ॥ ६ ॥

प्रदेहि चित्ते विमलावकाशं  
गतान्धकारं वितर प्रकाशम् ।  
कुरुष्व मे कल्मषराशि-नाशं  
हर प्रभो ! संसृति-बन्ध-पाशम् ॥ ७॥

मैत्रीं प्रशान्तिं सुखदां चिरन्तनं  
तनोतु विश्वे तव नाम-चिन्तनम् ।  
आत्मीयता-रूप-रसो महीयतां  
प्रभो जगन्नाथ ! कृपा विधीयताम् ॥ ८॥

- रचयिता : डॉ हरेकृष्ण-मेहेरः

Proofread by

Copyright Dr.Harekrishna Meher

---

—  
*Shri Jagannatha-Prarthana*

pdf was typeset on November 10, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

